ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

okyhcky e dkuiqj dk uke

डा0 नीलम शुक्ला
असिस्टेंट प्रोफेसर (शा0शि0)
डी0बी0एस0 कालेज, कानपुर

भारत में वालीबॉल का प्रारंभ मद्रास के वाईएमसीए कालेज में हुआ। 1925 से 1930 के मध्य यह खेल उत्तर भारत में आया और जल्द ही लोकप्रिय हो गया। 1936 में लाहौर (अब पाकिस्तान) में पहली सर्व हिन्द वालीबॉल चैम्पियनशिप हुई जो अविभाजित पंजाब टीम ने जीती। 7 फरवरी 1951 को सारे देश में वालीबॉल प्रेमी पंजाब के लुधियाना नगर में इकट्ठा हुए और वालीबॉल फेडरेशन ऑफ इण्डिया (वीएफआई) की स्थापना की। पंजाब के एफसी अरोड़ा इसके पहले अध्यक्ष और बंगाल के बसु पहले महासचिव चुने गये।

कानपुर में वालीबॉल खेल को प्रोत्साहन स्वतंत्रता के पश्चात मिली। 1950–52 में कानपुर अपने दमखम के साथ राष्ट्रीय प्रतिस्पर्धाओं में भाग लेने लगा। कानपुर के खिलाड़ियों में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर खेलने वालों में मेजर डा0 एन0डी0 शर्मा, देशपाल सिंह, सरदार जोगेन्दर सिंह कोहली, आर0पी0 दीक्षित प्रमुख हैं। राष्ट्रीय स्तर पर खेलने वालों में एस0एन0 तिवारी, सरदार अजित सिंह, संतोष मिश्रा, एस0के0 गौतम, अशोक शर्मा, टी0के0 गुप्ता, मोहम्मद नसीम, अशोक पाण्डेय, सवेन्द्र सचान, अशोक सचान, अवधेश सचान, राजेश दुबे, अनुज मिश्रा, विनोद सिंह, धर्मेन्द्र यादव और सुरेश यादव प्रमुख थे। लड़कियों में मंजरी दुबे, शिखा पाण्डेय, प्रियंका बाजपेयी, रनजीत कौर, निशी पाण्डे, मधु ज्ञानचंदानी और पायल गुप्ता राष्ट्रीय स्तर पर खेलीं।

भारत में अन्य खेलों की भांति इस खेल में सुविधा सही ढंग से देने, नियमों के अनुसार खेल खेलने की शिक्षा, मनोवैज्ञानिक ढंग से शिक्षित करने और युवकों के प्रति अधिक रूचि पैदा करने में पटियाला स्थित नेताजी सुभाष नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ स्पोर्ट्स ने प्रशंसनीय कार्य किया। आज भी यह योगदान दे रहा है। देश में तकनीकी खिलाड़ी पैदा करने में उक्त संस्थान का सहयोग अनोखा है। भारत में केवल नवयुवक ही नहीं, अपितु महिलाएं भी इस

खेल में रूचि अधिक ले रही हैं और अधिक से अधिक नौकरियाँ पा रही हैं। इस खेल में अंतर्राष्ट्रीय पदक प्राप्त करने के लिए पुरुष खिलाड़ी विदेशों में भी प्रयत्न कर कर हैं, महिलाएं भी पीछे नहीं हैं।

भारत अब तक इस खेल में विश्व की प्रतियोगिता में प्रथम स्थान तो नहीं कर सका, किन्तु 1962 में एशियाई खेलों में पदक टीपी नैयर की कप्तानी में जीत चुका है।

जहाँ एक ओर दुनिया के तमाम देश आगामी ओलंपिक खेलों में अपनी तकनीकी क्षमता और खिलाड़ियों के मनोबल के आधार पर विजयश्री प्राप्त करने की कोशिश में तैयारियों में जुटे हैं, वहीं भारत में आर्थिक रूप से क्रिकेट के ग्लैमर और अन्य वजहों से यह खेल पिछड़ता जा रहा है। अब इस खेल में नौजवानों की भी रूचि कम होती जा रही है।

रूस, क्यूबा, अमेरिका, ब्राजील, चीन, दक्षिण कोरिया और जापान अपने खिलाड़ियों को अत्याधुनिक तकनीकी का ज्ञान करा रहे हैं और क्रीड़ा शिक्षण संस्थानों में नए प्रयोग कर रहा है। ताशकंद का शहरी शिक्षण संस्थान इलेक्ट्रानिक, मैकेनिक ब्लाक लगाकर खिलाड़ियों को आधुनिकतम तकनीकी सुविधा दिला रहा है।

पुरूषों और महिलाओं दोनों के लिए राष्ट्रीय–विश्व स्तरीय प्रतियोगिताएं होती रहीं। 1954 में इस खेल को पेन अमेरिकन खेलों में शामिल किया गया। 1964 में टोक्यों ओलंपिक खेलों में इस खेल को प्रथम बार सम्मिलित किया गया। दल बनाकर खेले जाने वाले मनोरंजन खेलों में विश्व में इस खेल का तीसरा स्थान है।

फिर भी इस खेल को प्रगति विश्वव्ययापी नहीं थी। ग्रेट ब्रिटेन और आयरलैंड जैसे कुछ देश इस खेल की लोकप्रियता से वंचित रहे। जुलाई 1955 में एक राष्ट्रीय वालीबाल संस्था बनाने के लिए एक सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया। समझा जाता है कि यह संस्था ब्रिटेन में खेले जाने वाले खेलों में वालीबाल को उचित स्थान दिलाने में पर्याप्त सीमा तक सफल सिद्ध हुई।